डाक पंजीयन संख्या - श्रीगंगानगर/105/2006-2008
आर. एन. आई - राजहिन /2003/9899
प्रकाशन दिनांक : 4 जनवरी - 2008 . मूल्य : पाँच रुपये

अजायब बानी

(गुरु महिमा)

वर्ष - पाँच | अंक - नौवां | जनवरी-2008 | मासिक पत्रिका

धन्य अजायब
(सतसंगों के कार्यक्रमों की जानकारी) 2

3 अमृत वेला
(परम सन्त अजायब सिंह जी द्वारा अभ्यास में बैठने से पहले प्रेमियों को हिदायतें)
16 पी.एस.आश्रम राजस्थान

संघर्ष
(महात्मा चरनदास जी की बानी)
सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
16 पी.एस.आश्रम राजस्थान
30 दिसम्बर 1995 7

27 माफी
(परम सन्त अजायब सिंह जी द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब)
16 पी.एस.आश्रम राजस्थान
26 मार्च 1989

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने प्रिन्ट टुडे श्री गंगानगर से छपवाकर; 1027 अग्रसेन नगर श्री गंगानगर -335 001 (राजस्थान) से प्रकाशित किया।
उप सम्पादक : नंदिनी विशेष सलाहकार : गुरमेल सिंह नौरिया
सहयोग : रेणु सचदेव व परमजीत सिंह
सन्त बानी आश्रम : 16 पी.एस. रायसिंहनगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान)

Phone : 0154-246 4601 **Mobile :** 94144 - 80303
e-mail : dhanajaibs@yahoo.co.in **Website :** www.ajaibbani.org

धन्य अजायब

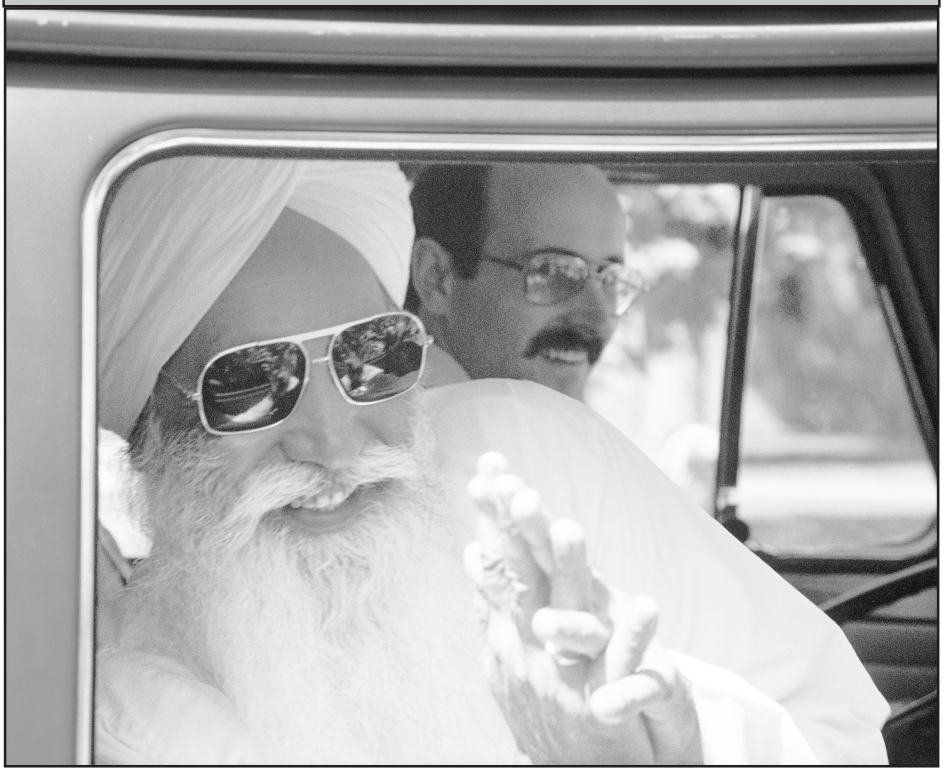

मुम्बई में सतसंगों के कार्यक्रम

9, 10, 11, 12 व 13 जनवरी – 2008

आरोग्य भूरा भाई भवन, शान्ति लाल मोदी मार्ग,
(नजदीक मयूर सिनेमा) कांदिवली (पश्चिम), मुम्बई – 400 067
फोन : 022–221 88 353, 022–286 286 26, मो. 93246 51321

16 पी.एस आश्रम में सतसंगों के कार्यक्रम

2, 3, 4, 5 व 6 फरवरी - 2008
29 फरवरी व 1, 2 मार्च - 2008

परम सन्त अजायब सिंह जी द्वारा अभ्यास में बैठने से पहले प्रेमियों को हिदायतें

अमृत वेला

16 पी.एस. आश्रम राजस्थान

जीव अनन्त काल से उस 'शब्द-नाम' से प्रभु परमात्मा की आवाज से टूटा हुआ है। सन्त-महात्मा सबको उस करण-कारण 'नाम' के साथ जोड़ने के लिए आते हैं। हम परमात्मा सावन के चरणों में नमस्कार करते हैं जिन्होंने यह फुलवाड़ी उस समय लगाई जब लोग दसों गुरुओं, ऋषियों, मुनियों की शिक्षा को भूल चुके थे; पत्थर पूज-पूजकर पत्थर ही हो गए थे। आपने हमें उस 'शब्द-नाम' के साथ जोड़ा, जो 'नाम' कण-कण में व्यापक है। हम आपका धन्यवाद किसी भी लफ्ज़ में नहीं कर सकते। पलटू साहब कहते हैं:

शिष्य शिष्य सब कहत है, शिष्य न भया कोए।
पलटू गुरु की बात को साधे सो शिष्य होए॥

सभी शिष्य होने का दावा करते हैं। वही भाग्यशाली शिष्य है जो गुरु की बात पर अमल करे। गुरु कहता है, ''अंदर जाएं, **अमृतवेला** की महानता को समझें और जो रास्ता मैं बताता हूं उस पर चलें।''

सतगुरु महाराज कृपाल ने हमें यही संदेश दिया कि मेरी देह से ज्यादा मेरे वचनों की इज्जत करें। इससे आपको बहुत फायदा होगा। सन्त-महात्मा किसी को अपनी देह के साथ जोड़ने के लिए नहीं आते। वे हमें उस 'शब्द-नाम' के साथ जोड़ने के लिए आते हैं जो खंड-ब्रह्मांड को सतह दे रहा है। पलटू साहब कहते हैं:

सन्त सन्त को दो कर जानी, सो जन जांण नर्क की खानी।

जो सन्तों की शिक्षा पर अमल कर लेते हैं वे उन्हीं का रूप हो जाते हैं और सच्चे-सुच्चे सेवक कहला सकते हैं। हम सतगुरु की शिक्षा पर चलकर ही उनकी महिमा कर सकते हैं।

हम जानते हैं कि महाराज सावन सिंह जी को सच का होका देने के लिए कितनी कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। उन दिनों यातायात के इतने साधन नहीं थे, आपने पैदल चलकर, घोड़ो पर सफर करके घर-घर जाकर 'नाम' की महिमा बताई कि सच्चे सन्त की संगत में जाने का क्या फायदा है और सच्चा सन्त कौन है? पलटू साहब कहते हैं:

सन्त परखिए रहन में चोर परखिए रात।

हमें सन्त के रहन-सहन का पता तब लगता है जब वह खुद 'शब्द-नाम' की कमाई करता है और जीवों को भी 'शब्द-नाम' के साथ जोड़ता है। वह खुद 'नाम' जपता है और अपने प्यारे बच्चों को भी 'नाम' का रूप कर देता है।

आपने हम गिरे हुओं को सहारा देने के लिए घर-घर जाकर यही संदेश दिया, ''प्यारे बच्चों! आप मुझे पराया न समझें, मैं आपका अपना ही हूँ।'' आपकी बख्शीश ऐसी थी अगर कोई शिष्य आपसे यह कहता कि मुझसे गलती हो गई है, मुझे बख्श दें! आप भरी संगत में कहते, ''क्यों भई! कोई है इसके पाप उठाने वाला?'' इतनी ताकत किसकी है हम तो अपना ही बोझ नहीं उठा सकते। आप बड़े प्यार से कहते, ''आगे से मत करना।'' आपके समझाने का ढंग ऐसा था कि बात किसी से करते और शर्मिन्दा कोई और होता।

आपने बड़ी भारी दया की है कि हमें अपनी याद में बैठने का मौका दिया है। आप आज भी हमारी देखभाल कर रहे हैं, देखभाल तो आपकी ही है, सतह भी आपकी है; बख्शीश भी आपकी है। हम जीव तो बहाना हैं। आप हमें सिखाकर गए है कि हम दिल लगाकर सच्चे 'नाम' की कमाई करें। आपके बताए हुए रास्ते पर चलें। यह आपकी ही दया है कि आप हम भूले-भटके जीवों को अपनी भक्ति का उद्यम बख्श रहे हैं, अपनी तरफ लगा रहे हैं।

जांका हुक्म दरगाह चले सो किसका नजर न आवे तले।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''परमात्मा अपनी दरगाह में सन्त का हुक्म सुनता है। परमात्मा ने अपनी दरगाह में उसे सच्ची शोभी बख्शी होती है। ऐसा सन्त दुनिया की माया पर कैसे नजर रख सकता है? उसकी नजर में तो बस उसका गुरु ही होता है जिस गुरु ने उसे अंदर 'शब्द' और आवाज के साथ जोड़कर शब्द-रूप ही कर दिया होता है। सभी सन्त-महात्माओं ने **अमृतवेला** की महानता बताई है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

अमृतवेले बोलया पपीहा ते दर सुनी पुकार।
मेघा नू फरमान होया बरसो कृपा धार॥

सूफी सन्त फरीद साहब ने पशु-पक्षियों व जंगली जानवरों की बड़ी महानता की है। आप कहते हैं कि मैं उन पर कुर्बान जाता हूं जो कंकर-पत्थर चुगकर भी परमात्मा को याद करते हैं।

कंकर चुगन थल वसन, रब न छड्डन पास।

इंसान को सृष्टि का सरताज कहा गया है कि इसे परमात्मा ने कितनी नियामते दी हैं। गुरु नानकदेव जी आकाश में उड़ने वाले एक छोटे से पक्षी पपीहे की मिसाल देकर समझाते हैं, ''पपीहा चाहे प्यासा ही मर जाए लेकिन वह नदी-नालों का पानी नहीं पीता, स्वाति की बूंद ही पीता है। पक्षी भी अपने कुल का धर्म पालते हैं। परमात्मा ने किसी पर कोई लेबल नहीं लगाया कि तू हिन्दु, मुसलमान, सिख या इसाई है। इंसान ने अपने शरीर पर लेबल लगाकर खुद ही अपने आपको जकड़ रखा है।'' सन्त रविदास जी कहते हैं:

जात पात पूछे न कोए, हर को भजे सो हर का होए॥

परमात्मा की भक्ति करने वाला परमात्मा का है। सन्तों ने हर कौम, हर जाति में आकर 'नाम' का प्रचार किया। रविदास जी महाराज कहते हैं कि मेरी कुल के लोग चमड़े का काम करते हैं, बनारस के आस-पास पशु ढोते हैं। मेरे गुरु की दया से चार वेद पढ़े हुए पंडित भी मेरे पैरों पर माथा टेकते हैं। यह 'नाम' की ही महिमा है।

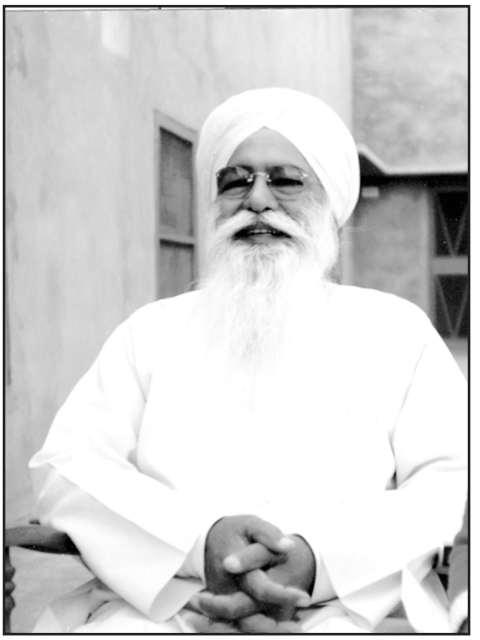

सन्त किसी से माथा टिकवाकर खुश नहीं होते। उनका मिशन तो मेहनत करके अंदर जाना होता है। सन्तों के आगे-पीछे भागने या उनके पैरों पर गिरने की बजाय अगर हम वह साधना करें जो वे हमें बताते हैं, हम गुरु को प्रसन्न करके उसे अपने अंदर बिठा लें फिर जो चाहे उनसे बात करें।

महाराज सावन सिंह मिसाल देकर समझाया करते थे, ''अगर आपने घर में कोई अलमारी, मेज बनवाना है तो आपको बार-बार मिस्त्री को घर बुलाना पड़ेगा अगर आप मिस्त्री के साथ प्यार करके उसे अपने घर में ही रख लें तो उससे जो चाहे बनवाते रहें।''

गुरु नानकदेव जी प्यार से बताते हैं कि जब पपीहा प्यासा मरता है तो वह **अमृतवेला** में पुकार करता है। आमतौर पर पपीहे के बोलने पर गांव में रहने वाले बुजुर्ग अपने बच्चों से कहते हैं कि पपीहा बोल रहा है आज बारिश आएगी।

अगर हम भी **अमृतवेला** में हर तरफ से अपना ख्याल हटाकर परमात्मा की याद में बैठेंगे तो परमात्मा हमारी पुकार जरूर सुनेगा। आप अपना ख्याल बाहर से हटाकर, दोनों आंखों के बीच टिकाकर सिमरन करें।

सतसंग–परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

संघर्ष

16 पी.एस. राजस्थानः 30 दिसम्बर 1995

महात्मा चरनदास जी की बानी

परमपिता परमात्मा सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार हैं। जिन्होंने गरीब आत्माओं पर रहम करके अपना यश करने का मौका दिया है। परमात्मा जब अपार कृपा करता है, बहुत सारे पुण्यों का इनाम देना चाहता है तो वह हमें इंसानी जामा बख्शता है; जब और दया करता है तो हमें किसी महात्मा की संगत-सोहबत बख्शता है। सवाल यह है कि सन्त हमें क्या कहते हैं वे दिन-रात क्या पुकारते हैं? मैं हमेशा ही बताया करता हूं कि सन्त हमें जो कुछ भी कहते हैं उसे हमें अपने जीवन में ढ़ाल लेना चाहिए। गुरु रामदास कहते हैं:

सन्तो सुनो-सुनो जन भाई, गुरु काढ़े बांह कुकीजे।

जैसे मल्लाह दरिया के किनारे अपनी बेड़ी लाकर आवाज देता है, ''जिसने पार जाना है आओ! बैठो! मैं तुम्हें ले चलता हूं।'' इसी तरह सन्त-महात्मा दिन-रात सतसंग के जरिए हमें समझाते हैं क्योंकि उनके दिल में हमारे लिए दर्द होता है। हजरत बाहु कहते हैं:

दर्दमदां दी आहां सुणके, भज नाग जमी विच वड़दे हू।

जिनके दिल में दर्द होता है अपनी आत्मा के लिए रहम होता है सन्तों के वचन उनके दिल में घाव कर जाते हैं। वे सन्तों के एक-एक वचन की कद्र करते हैं। जब हम सन्त-महात्माओं की बानी पढ़ते हैं उसमें सतसंग की महिमा होती है, करनी की महिमा होती है। आप किसी भी महात्मा की जीवनी पढ़कर देखें! चाहे कोई महात्मा दो या चार युग पहले आया या कोई पाचं सौ साल पहले इस संसार में आया, हर एक महात्मा के जीवन से पता लगता है कि उसने जिंदगी में कितना **संघर्ष** किया, कितनी मेहनत की।

आमतौर पर जब तक हमें 'नाम' नहीं मिला होता हम तब तक यही कहते हैं कि सब कुछ परमात्मा के हाथ में है, वह करण-कारण है। हम यह तभी कहते हैं जब तक हम अपनी जिम्मेवारी नहीं समझते। यही सवाल गुरु नानकदेव जी से किया गया कि आप कहते हैं कि सब कुछ करने वाला परमात्मा है तो इंसान गरीबी, बीमारी, बेरोजगारी क्यों भोगता है? आपने कहा कि जब हमारे ऊपर आफत आती है तो हम परमात्मा में नुख्स निकालते हैं कि हमारे साथ ऐसा क्यों हुआ? जब कभी थोड़ा सा अच्छा समय या सुख आता है तो हम अपने आपको बड़ाई देते हैं कि मैंने ऐसे किया तो ऐसा हुआ।

कोई कारागृह में उम्र कैद भोग रहा है। उसके मेरे पास दो पत्र आए उन पत्रों में उसने अपनी इतनी बड़ाई पेश की कि मैंने कभी किसी का बुरा नहीं किया, मैंने जिसका भी भला किया उसने ही मेरे साथ बुरा किया है। मैं उसे जवाब तो देना जानता था लेकिन यही कहना मुनासिब समझा कि सब्र और शुक्र हाथ से न निकलने दो। जिसके पास ये दो चीजें आ गई उसके पास सब धन-पदार्थ हैं। हम अपने गुण तो हमेशा बताते हैं लेकिन अवगुण मुश्किल ही बताते हैं अगर कहेंगे तो दिखावे का ही कहेंगे। दिखावे के तो हम कान भी पकड़ते हैं और यह भी कहते हैं कि मैं सबसे बुरा हूं, बेवकूफ हूं।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि बाहर से नम्रता दिखाना अंदर से मान ही मान चाहना धोखे के समान है। आप यह भी कहते थे कि जैसा हम अपने आपको कहते हैं ऐसा कोई और कह भी दे तो हमारे दिल को ठेस लगती है। यह कहने की बात नहीं अंदर धारण करने की बात है। हमें सब सन्तों की बाणियों से पता लगता है कि उन्होंने अपनी जिंदगी में कितना **संघर्ष** किया होता है।

अगर हम इंजीनियर बनना चाहते है तो कितना **संघर्ष** करते हैं अगर जमींदारा करना है तो कितनी मेहनत करनी पड़ती है? दिन-रात **संघर्ष** करके भी जमींदार नतीजा परमात्मा पर छोड़ देते हैं।

हरी खेती देखके, भरगल गया किसान।
झखड़ झोला सिर ते प्या, घर आई ते जान॥

हर काम मेहनत मांगता है। जैसे कुम्हार बर्तन बनाता है जबकि देखने में यह बहुत ही मामूली सा काम लगता है लेकिन बर्तन बनाने के लिए सीखना पड़ता है कि बर्तन कैसी मिट्टी से बनेगा? वह चाक कैसे बनेगा जिस पर बर्तन घूमता है, कैसे बर्तन के अंदर हाथ रखकर मिट्टी को कूटना है। घड़े को कैसे सेक देकर पकाया जाता है? हमें ये तरकीब किसी कुम्हार के पास जाकर सीखनी पड़ती है।

गुरु नानकदेव जी, कबीर साहब कुल मालिक इस संसार में आए फिर भी उन्होंने कितना **संघर्ष** किया। क्या कबीर साहब को, गुरु नानकदेव जी को अच्छे खाने नहीं मिलते थे?

पहले पाई बख्श दर, पिछों दे गुरु घाल कमाई।
रेत अक आहार कर, रोड़ां दी गुरु करी विछाई।
भारी करी तपस्या, वड्डे भाग हर स्यों बणआई॥

पहले आप पर परमात्मा की बख्शीश हुई फिर आपने कड़ी मेहनत की। आपके ऊंचे भाग्य थे कि आपकी परमात्मा के साथ बन गई परमात्मा ने कहा कि भई! तेरा **संघर्ष** तो मुझे पहले ही मंजूर था; तू मुझे बहुत प्यारा है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''हम डाक्टर से दवाई लाकर अलमारी में रख देते हैं और डाक्टर को भला-बुरा कहते हैं। डाक्टर जो परहेज बताता है वे परहेज भी करने होते हैं और दवाई भी समय पर खानी होती है।''

इसी तरह सन्त-महात्मा जब हमें 'शब्द-नाम' का भेद देते हैं तो वे कुछ परहेज भी बताते हैं कि साधना कैसे करनी है? लेकिन हम सोचते हैं कि परहेज की क्या जरुरत है, मेहनत की क्या जरूरत है? सन्तमत दिखावे का नहीं, **संघर्ष** का मत है।

आप गुरु गोविंद सिंह जी महाराज का इतिहास पढ़कर देखें! आपने बहुत रातें जागकर गुजारी। महात्मा रात को घूम-फिरकर नहीं जागते, वैसे तो चोर भी रात को जागते हैं लेकिन चोर लोगों के घरों में चोरी करते हैं। सन्त-महात्मा दुनिया की तरफ से सो जाते हैं और प्रभु की तरफ से जाग जाते हैं। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं:

चिड़ी चूकी पह फुटी, वगण बहुत तरंग।
अचरज रुप संतन रचे, नानक नामे रंग॥

जब दुनिया खर्राटे मारकर सोई होती है, उस समय मालिक के प्यारे परमात्मा के साथ जुड़ जाते हैं। वे सोचते हैं कि अच्छा मौका है लोग सोए हुए हैं, शोर नहीं है। उस समय रुह ने ताजा-ताजा शरीर में प्रवेश किया होता है ऐसे समय में अभ्यास करने से सुरत आसानी से शरीर से अलग हो जाती है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

पढ़या होवे गुनाहगार ते उम्मी साध न मारिए।
पढ़या ते उम्मियां, विचार अग्गे विचारिए।
जेहा घाले घालना, ते बेहो नो पचारिए॥

अगर पढ़ा-लिखा गलती करता है तो उसके बदले अनपढ़ साधु को सजा नहीं दी जाती। परमात्मा के दरबार में फैसला होता है कि पढ़ा-लिखा ठीक है या अनपढ़ ठीक है। हम जिंदगी में जैसा कार्य करते हैं वैसा ही हमारा नाम पड़ जाता है अगर हम दिन-रात 'शब्द-नाम' की कमाई करके शब्द से जुड़ जाते हैं तो साधुगति को प्राप्त हो जाते हैं, मालिक के प्यारे भक्त बन जाते हैं। चोरी करने में अपनी जिंदगी लगा देते हैं तो लोग हमें चोर कहना शुरू कर देते हैं। अमल खाते हैं तो लोग अमली कहना शुरू देते हैं। महात्मा चरनदास जी कहते हैं कि यह करनी का मत है कथनी का नहीं।

चरनदास जी बहुत कमाई वाले थे, आप परमगति को प्राप्त थे। आप राजस्थान के अलवर जिले में पैदा हुए। आपने बाकी का जीवन दिल्ली में व्यतीत किया। आपके आगे चरनदास जी की बानी है:

करनी की गति और है कथनी की औरे।
बिन करनी कथनी कथैं बक बाकी बौरे॥

आप प्यार से कहते हैं, ''कथनी की बात और है और करनी की और है अगर करनी के बिना कोई कथनी की बात करता है तो वह बकवास करता है। न उसे खुद को शान्ति है और न ही उसका उपदेश सुनने वाले को शान्ति है अगर हम सारा दिन रोटी-रोटी करते रहें तो भूख नहीं मिटती। पानी-पानी करते रहें तो प्यास नहीं बुझती, प्यास में बढ़ोतरी जरूर हो जाती है।''

कबीर साहब कहते हैं अगर पौंड-पौंड करने से कोई साहूकार बन जाता तो लोगों को बड़े-बड़े कारखाने चलाने की क्या जरूरत है? दिन-रात कारखाना चलाएगा तभी पैसे कमाएगा और जो पैसा लगाया है उसकी आगे बढ़ोतरी करेगा। जमींदार दिन-रात मेहनत करता है तो ही अच्छी फसल पैदा करके पैसे में बढ़ोतरी करता है।

बहुत से प्रेमी 'नाम' ले जाते हैं शुरू-शुरू में उनमें लगन, प्यार होता है। जो करनी में लग जाते हैं वे तरक्की कर जाते हैं। जो करनी नहीं करते वे राख छानते रह जाते हैं। जब उनसे पूछें तो वे कहते हैं, ''महाराज जी! शुरू-शुरू में तो हमें प्रकाश दिखाई देता था, रस भी आता था लेकिन गलती हो गई, हमने शराब पी ली, मीट खा लिया।'' प्यारेयो! सन्तों ने शिष्यों की पलटन नहीं बनानी होती।

बिशनदास जी कहा करते थे, ''शेरनी का एक ही बेटा होता है, वह सारी वनस्पति पर राज करता है। सूरनी के कितने ही बच्चे होते हैं लेकिन वे गंद में ही रहते हैं।'' कबीर साहब कहते हैं:

अपनी देह की क्या गत, तारे पुरुष करोड़।

जैसे 'नाम' लेते हुए पहले दिन तड़प होती है अगर हम वैसे ही मेहनत करते रहें, लगन लगाए रखें तो अपना उद्धार क्या मुश्किल है? करोड़ो का भी उद्धार कर सकते हैं।

कबीर साहब कहते हैं, ''अगर किसी गधे पर हजारों मन किताबें लाद दें! वह उस ज्ञान से अंजान ही रहता है।'' अगर पढ़ने-लिखने से या लेक्चर करने से मन को शान्ति आती तो राजा रावण को भी शान्ति आ जाती जोकि बहुत पढ़ा-लिखा था। दुनिया में रावणी टीका अभी भी मशहूर है। रावण पराई औरतों को ही देखता रहा। अगर स्वर्गों के राजा इन्द्र के मन को शान्ति होती तो क्या वह स्थूल दुनिया में आकर गौतम ऋषि की धर्मपत्नी को भला-बुरा कहता? गौतम ऋषि से श्राप लेता? हम कहानियां तो पढ़ते हैं कि वे देवता हैं क्या कभी विचार किया! अगर देवताओं को शान्ति होती तो क्या वे इस संसार में आकर काम के हाथों जलील होते?

हम स्थूल दुनिया में है तो स्थूल मन हमें बंदर की तरह नचा रहा है। जब सूक्ष्म देश में जाते है तो वहां सूक्ष्म मन है। जब कारण देश में जाते हैं तो वहां कारण इन्द्रियां हैं। आप प्यार से कहते हैं कि कथनी और करनी में बहुत फर्क है।

करनी बिन कथनी इसी ज्यों ससि बिन रजनी।
बिन सस्तर ज्यों सूरमा भूषन बिन सजनी॥

आप प्यार से कहते हैं, ''करनी के बिना कथनी इस तरह है जिस तरह चंद्रमा के बिना रात। आप जानते हैं कि चंद्रमा के साथ रात कितनी सुहावनी लगती है, चंद्रमा का प्रकाश दिल को छू लेता है। जैसे चंद्रमा के बिना रात शोभा नहीं देती इसी तरह अगर किसी औरत या मर्द ने कपड़े न पहने हों तो वे शोभा नहीं पाते।''

प्यारेयो! चाहे हम कितने भी समझदार हों अगर हम दिन-रात कथनी पर जोर दें, करनी न करें तो हम भी मालिक के दरबार में शोभा नहीं पाते। जब मन को शान्ति न आई और विषय-विकार भटकाते रहें तो हम मालिक के दरबार में कैसे शोभा पा सकते हैं? जो हमारे साथ चार दिन संगत करेगा वह भी यही कहेगा कि यह बातें तो मीठी-मीठी करता है लेकिन इसकी करनी कैसी है?

ज्यों पंडित कथि कथि भले बैराग सुनावै॥
आप कुटुंब के फँद पड़े नाहीं सुरझावैं॥

जैसे पंडित या भाई, लोगों को पढ़-पढ़कर सुनाते हैं लेकिन उनके अपने मन को शान्ति नहीं, वे खुद कुटुम्ब में फँसे होते हैं। उनका काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार कम नहीं होता। महात्मा चरनदास जी एक जगह लिखते हैं:

ब्राह्मण सो जो ब्रह्म पछाने, बाहर जांदा भीतर आने।
आत्म विद्या पढ़े-पढ़ावे, परमात्म स्यों ध्यान लगावे॥
काम, क्रोध, लोभ, मोह न होई, चरनदास कहे ब्राह्मण सोई।
पढ़ पंडित अवरे समझाए, घर जलते ही खबर न पाए॥

वही पंडित है जो पारब्रह्म में पहुंच गया है। उसे साधु कह लें या ज्ञानी कह लें। वह बाहर जो कथा करता है उसे अपने अमल में लाए और दया का जनेऊ हृदय में रखे। वह आत्मा की विद्या पढ़ता हो, आत्मिक उपदेश देता हो कि प्यारेयो! परमात्मा तुम्हारे अंदर है, उससे इस तरह मिलना है वह जो समय किताबें पढ़कर लोगों को सुनाता है उसे खुद भी अमल में लाए। कबीर साहब कहते हैं:

पहले मन परबोधे अपणा, पीछे अवर रिझावे।

हम लोगों को समझा रहे हैं लेकिन अपना घर उजड़ रहा है। अगर बाहर बातें करने से इन पांचों डाकुओं से बचा जा सकता तो हम ग्रंथों में इन ऋषियों-मुनियों का मजाक नहीं उड़ाते? हम देखते हैं कि हर कोई इन पांचो डाकुओं के आगे बंदर की तरह नाच रहा है। इंसान रात को आराम से सोया होता है काम कैसे उसे चारपाई से उठा लेता है? क्रोध में हम अपना रिश्ता ही भूल जाते हैं। भाई-भाई का सिर गाजर, मूली बना देते हैं।

बाँझ झुलावै पालना बालक नहिं माहीं।
बस्तु बिहीना जानिये जहँ करनी नाहीं॥

महात्मा चरनदास जी कहते हैं, ''जैसे कोई बांझ औरत झूले के ऊपर कपड़ा डालकर झूला झुलाने लग जाए कि इसमें बच्चा है तो देखने वाला यही कहेगा कि इसके अंदर कुछ है ही नहीं। जैसे कोई बाजार में दुकान खोल ले! उस दुकान के अंदर कोई वस्तु हो ही न और बाहर इश्तिहारबाजी करता रहे कि आओ! बड़ी अच्छी दुकान है। जो इश्तिहार पढ़कर जाएगा उसके पल्ले क्या पड़ेगा?''

काफी साल पहले हमारे जिले में बिजली का प्रबंध नहीं था, वाटर कूलर के बारे में कोई नहीं जानता था। शुरू-शुरू में जब वाटर कूलर चला तो रोज अखबार में इसके बारे में आता था। अखबार में जिस दुकान का पता था वहां हमारे अजीत सिंह और गुरमेल जा धमके। दुकानदार इनको देखकर हंसने लगा कि आप अखबार पढ़कर आए होंगे पर मेरे पास तो वाटर कूलर नहीं है।

परमार्थ में भी जगह-जगह इस तरह की दुकाने खुली हुई हैं; दिन-रात इश्तिहारबाजी की जाती है। अखबारों में दिया जाता है कि आओ! आपको 'शब्द-नाम' का भेद दें, ज्योत के साथ जोड़ दें। उनकी खुद की तो ज्योत अभी जगी नहीं होती। प्यारेयो! यह बड़ी सोचने वाली बात है वे खुद तो धोखे में होते हैं; दुनिया को भी धोखे में रखते हैं। कबीर साहब कहते हैं:

अवरो को उपदेश दे, मुख में पड़ है रेत।
रास बिरानी राखते, खाया घर का खेत॥

महात्मा भीखा साहब कहते हैं:

भीखा बात अगम की, कहन सुनन में नाहें।
जो जाने सो कहे न, कहे सो जाने नाहें॥

यह अगम की बात है। कहने वाली नहीं, करने वाली है। जो जानता है वह इश्तिहारबाजी नहीं करेगा। हमारे पास दो रूपये हों तो हम उन्हें कैसे संभालकर रखते हैं, क्या रूहानियत ही ऐसी है?

कबीर साहब कहते हैं, ''खुद प्यासे हैं और लोगों को नीर बख्शते हैं।'' सभी महात्मा करनी पर जोर देते हैं।

आत्मघाती महापापी।

महाराज कृपाल कहा करते थे कि जगह-जगह बर्तन न करें, हो सकता है वहां स्वार्थ की हांडियां उबल रही हो? महाराज सावन कहा करते थे कि ज्यादा भीड़ इस बात का सबूत नहीं कि वहां पूरा महात्मा है। कुरुक्षेत्र में कौन है? वहां करोड़ो लोग इकट्ठे होते हैं। जहां ज्यादा भीड़ होती है वहां इंतजाम करने वाले भी आ जाते हैं। हम सोचते हैं शायद यहां कोई पूर्ण महात्मा है। महात्मा की कमाई देखें! क्या इसने जिंदगी में **संघर्ष** किया है? गुरु गोविंद सिंह जी कहते हैं:

डिम्बन में परमेश्वर नाहीं।

बहु डिंभी करनी बिना कथि कथि करि मूए।
संतों कथि करनी करि हरि के सम हूए॥

महात्मा चरनदास कहते हैं कि जो लोग करनी के चोर हैं वे कथनी के बहादुर हैं। वे लोगों को डिम्ब दिखाते हैं। सन्त जो देखते हैं वही बोलते हैं। परमात्मा और सन्तों में कोई फर्क नहीं होता।

मैं बताया करता हूं कि एक आदमी ने भौगोलिक विद्या पढ़ी है वह नक्शा देखकर बता सकता है कि यह अमेरिका, इंग्लैंड या हिन्दुस्तान है। हम नक्शे में नहरें, सड़के भी देख लेते हैं कि यह किस मुल्क में है लेकिन एक आदमी ने वे जगह अपनी आंखों से जाकर देखी हैं। अब आप सोचकर देखें! इनमें से कौन सच्चा है? एक आदमी ने मिठाई न खाई हो लेकिन वह मिठाई की प्रशंसा बहुत अच्छी करता हो और दूसरे ने मिठाई खाई हो। एक कथनी करता है और दूसरा जाकर सब कुछ देखता है। सन्तों का कथनी पर नहीं करनी पर जोर होता है क्योंकि सन्त जो देखते हैं वहीं बोलते हैं:

सन्तन की सुन साची साखी, जो बोलन सो पेखन आखी।

कहैं गुरु सुकदेव जी चरनदास बिचारौ।
करनी रहनी दृढ़ गहौ थोथी कथनी डारौ॥

महात्मा चरनदास जी के गुरु सुखदेव मुनि ने आपको कहा, ''देखो बेटा! करनी के साथ जो परहेज बताए गए हैं वह भी करने हैं। थोथी कथनी को दूर फेंक दें इसकी कोई कीमत नहीं। कथनी छिलका है करनी गिरी है। जो स्वाद गिरी में है वह छिलके में नहीं।''

सन्त 'नाम' देते समय यही कहते हैं कि आपने रोजाना इतना समय भजन करना है। बातों में समय नष्ट न करें अगर यह बातों का मजबूत होता तो हम जिन महात्माओं की बानियां पढ़ते हैं वे इतनी मेहनत क्यों करते? नानक जी कहते हैं: ***गल्लीं किसे न पाया।***

साधो निंदक मित्र हमारा, साधो निंदक मित्र हमारा॥

सूफी सन्त बुल्लेशाह कहते हैं, ''हम सच बोलते हैं तो भांबड़ मचता है अगर चुप रहते हैं तो पल्ले कुछ नहीं रहता। हम वही बोलते हैं जो मालिक की तरफ से हुक्म आता है।'' गुरु नानकदेव जी ने भी भाई लालो से यही कहा था:

जैसी आवे खसम की बानी, तैसी करे ब्यान वे लालो।

जब आपने ऐमनाबाद में भविष्यवाणी की, ''यहां मुगल चढ़ाई करेंगे, यहां का बुरा हाल होगा।'' उस समय भाई लालो ने कहा, ''महाराज जी! आप इन लोगों पर कुछ रहम करें।'' गुरु नानकदेव जी ने कहा, ''जो धुर दरगाह से खसम की बानी आ रही है, मैं वही कह रहा हूं मेरे बस में कुछ नहीं। ये लोग परमात्मा को भूले बैठे हैं फिर इनके लिए परमात्मा का नाम लेना भी मुश्किल हो जाएगा।''

राम न कबहु चेतया, फेर कहन न मिले खुदाए।

सन्त प्यार से कहते हैं कि परमात्मा अंदर है। परमात्मा न पत्थरों में है, न पानी में है और न ही किसी धर्मग्रंथ में है। धर्मग्रंथों

के कहे मुताबिक **संघर्ष** करें तो ही परमात्मा मिलेगा। सन्त-महात्मा धर्मग्रंथों की निन्दा नहीं करते। वे कहते हैं कि ये उन महात्माओं के धर्मग्रंथ है जिन्होंने **संघर्ष** किया, पिंड को छोड़कर ब्रह्मांड पर चढ़े और परमात्मा मालिक के साथ विसाल किया। उन्होंने अपने अंदर जो कुछ देखा, उन्हें जो रूकावटों पेश आई, उन रूकावटों को कैसे दूर किया उसका जिक्र इन धर्मग्रंथों में कर दिया।

किसी पूर्ण महात्मा के चरणों में जाओ जुड़ा हुआ ही जोड़ सकता है। आपको बाहर से परमात्मा नहीं मिलेगा वह सबके अंदर है। उस समय की हुकूमत ने गुरु तेग बहादुर का कत्ल किया। आपका यही कसूर था कि आप सबसे यही कहते थेः

काहे रे बन खोजन जाई, सर्व निवासी सदा अलेपा तो ही संग समाई।
पोप मध ज्यो वास वसत है, मुकर में जैसे स्याही।
तैसे ही हरि वसे निरन्तर, घट ही खोजो भाई।
बाहर भीतर एको जाने, ऐह गुरु ज्ञान बताई।
जन नानक बिन आपा चीने, मिटे न भ्रम की काई॥

आपने यही कहा, ''परमात्मा आपके अंदर इस तरह समाया हुआ है जैसे दूध में घी, मेहंदी के पत्तो में रंग, फूल में खुशबू और शीशे में रोशनी है लेकिन आप उस घट को खुद नहीं खोज सकते। कोई महात्मा ही बताएगा कि वह घट कहां है और किस रास्ते से अंदर जाना है? महात्मा यह नहीं कहते कि आप हाथ पर हाथ रखकर बैठे रहें। वे कहते हैं कि आप **संघर्ष** करें, मेहनत के चोर न बनें।''

मैं कहा करता हूं कि जब 'नाम' मिल जाए तो हमारा धर्म है प्यार के समुद्र में डुबकी लगाकर 'नाम' का मोती निकालें। स्कूल में नाम लिखवाने से ही कोई एम.ए. पास नहीं होता, सोलह साल लगाने पड़ते हैं मेहनत करनी पड़ती है।

जब गुरु नानकदेव जी नौकरी छोड़कर मसानों में जाकर बैठ गए तो किसी ने मोदी खान पठान से कहा कि वह तो पागल हो गया

है हो सकता है कि तुम्हारा हिसाब-किताब भी लोगों को लुटा दे। मोदी खान ने आपसे पूछा, ''तुम कौन हो?'' गुरु नानक ने कहा:

हिंदू कहे ता मारीए, मुसलमान भी नाहीं।
पांच तत का पुतला गैबी खेले माहीं॥

उस समय मुगलों का राज्य था। आपने कहा, ''अगर मैंने कहा कि मैं हिन्दु हूं तो आप लोग मुझे मारेंगे लेकिन आप मुझे जैसा मुसलमान समझते हैं मैं वैसा मुसलमान भी नहीं हूं। परमात्मा को इन आंखों से नहीं देखा जा सकता और इन कानों से उसकी आवाज को नहीं सुना जा सकता। अंदर की आंख उसे देख सकती है और अंदर के कान ही उस आवाज को सुन सकते हैं। वह परमात्मा मेरे अंदर काम कर रहा है जिसे शरीर करके नानक कहते हैं।''

कबीर साहब ने कहा था, ''सच कहते हैं तो मारने को आते हैं झूठ कहा नहीं जाता।'' सन्त संसार में आकर सच बोलते हैं:

पंडित भेख पेट के मारे, वे सन्तन पर करते तान।
हितकर सन्त उन्हें समझावें, वे माने नहीं माने आन।
उन्हें चाह मान और धन की, परमार्थ से खाली जान॥

जिन लोगों की दुकानदारी चल रही होती है ये पंडित, भाई, मुल्ला, पादरी ये सभी एक ही श्रेणी में आ जाते हैं फिर ये मालिक के प्यारों की निन्दा करते हैं। हम समाजिक लोग न पढ़े-लिखों में हैं और न अनपढ़ो में ही हैं अगर किसी ने हमारे कान में फूंक लगा दी तो हम उसी फूंक को पकड़कर बैठ जाते हैं।

थोड़े दिन पहले मेरे एक नामलेवा ने बताया कि किसी गुरु ने उसके घर जाकर कहा कि वह 'नाम' ले। उस नामलेवा ने कहा, ''मुझे तो बाबा जी से 'नाम' मिला हुआ है।'' उस गुरु ने कहा, ''मेरा नाम तुझे क्या कहता है? उस 'नाम' की जगह यह 'नाम' जप लिया कर।'' उसने जबरदस्ती मेरे नामलेवा के कान में फूंक

मार दी। जब उसने मुझे यह बात बताई तो मैंने हंसकर कहा, ''उस फूंक से तेरा कुछ नहीं बिगड़ा।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

सिखा कन चढ़ाईया, गुरु ब्राह्मण थीया।

ऐसे गुरु कान में फूंक मारकर कहते हैं कि आज से मैं ही तेरा गुरु हूं अब तुझे किसी से बात करने की जरूरत नहीं। ऐसे लोग फिर निन्दा करते हैं लेकिन सन्त उनका जवाब निन्दा में नहीं देते, बल्कि उनसे प्यार करते हैं। महात्मा चरनदास कहते हैं कि निन्दक को अपने पास रखो उससे प्यार करो। कबीर साहब कहते हैं:

जे कोई निन्द करे हर जन की, तो अपना गुण न गँवावे।

ऐसा नहीं कि कोई हमारी निन्दा करे तो हम उससे बढ़कर उसकी निन्दा करने लग जाएं। हमने अपने धर्म का पालन करना है। हमारा धर्म सबको अपने से अच्छा समझना है कि कही हमारे अंदर यह ऐब न आ जाए! गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''निन्दा तो पापी की भी बुरी है।'' महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''निन्दा न मीठी है न खट्टी है फिर भी हर किसी के साथ चिपकी हुई है।''

निंदक कूँ निकटे ही राखौं होन न देउँ नियारा॥
पाछे निंदा करि अघ धोवै सुनि मन मिटै बिकारा॥

आप कहते हैं कि निन्दक की सेवा करें, हो सके तो उसके पैर भी धोकर पी लें! उसे अच्छा खाना खिलाएं क्योंकि वह बिना साबुन आपके कपड़े धोता है, बिना मजदूरी आपकी मुनियादी करता है। निन्दक को अपने पास रखें और उससे प्यार करें।

महाराज सावन कहा करते थे, ''ऐसा कोई है जो किसी के पाप अपने ऊपर लेता है। निन्दक बिना कहे आपके पाप उठाता है?''

पलटू साहब कहते हैं, ''निन्दक ही ऐसा मित्र है जो किसी की खातिर खुद नर्क में जाता है।''

कई प्रेमी तो यह भी नहीं जानते कि निन्दा क्या होती है? मैं अपने एक खास मित्र की बात बताया करता हूं कि उसे निन्दा करने की बहुत आदत थी। वह निन्दा करके एक-दूसरे को लड़वा देता था। वह यहां आश्रम में आकर रहने लगा तो यहां भी आश्रम के प्रेमियों को एक-दूसरे से लड़वाने लगा। मैं कुछ दिन तो उसे देखता रहा फिर एक दिन मैंने उससे कहा, ''अब सब्र कर यह अच्छी बात नहीं।'' उसने मुझसे कहा कि मैंने तो कुछ नहीं किया।

हमारे यहां जो भाग सिंह है अगर कोई उसे मामूली सी बात कह दें तो वह आगे-पीछे नहीं देखता, एटमबम की तरह दूसरे पर पड़ जाता है। मैंने उस प्रेमी से कहा, ''हमें इकट्ठे रहते हुए चालीस साल हो गए हैं अब तो मेहर कर।'' उसने कहा, ''मैंने तो कुछ कहा ही नहीं। ये खुद ही लड़कर बैठे हुए हैं।''

मेरे कहने का भाव कि हमें निन्दा का भी ज्ञान नहीं। हम दिन-रात निन्दा करते हैं फिर कहते हैं कि हम तो बातें ही करते हैं। निन्दा यही है कि जो हमारे पास ही नहीं, हमारी बात ही नहीं सुन रहा; हम उसकी बात क्यों करें?

एक बार महाराज सावन सिंह जी ऐबटाबाद सतसंग देने के लिए गए तो वहां के प्रबंधकों ने कहा, ''महाराज जी! हम इश्तिहार निकाल दें या शहर में मुनियादी करवा दें?'' महाराज जी ने कहा, '' तुम क्यों फिक्र करते हो जिनका काम है वे खुद ही कर लेंगे।'' थोड़े ही समय बाद आर्यसमाजी और अकाली जीप पर स्पीकर रखकर सारे शहर में मुनियादी करने लगे कि राधास्वामियों का गुरु आया है। वह सिर पर बाजा रख देता है, आवाज अंदर से आती है। उसकी आंखों में जादू है कोई उस तरफ मत देखना, वहां मत जाना।

महाराज जी चौबारे पर खड़े होकर यह सब देख रहे थे। आपने प्रबंधको से कहा, ''देखो! तुम्हारा काम करने वाले हैं कि नहीं?'' वहां इतनी संगत आई कि पंडाल छोटा पड़ गया। सब औरत-मर्द

कहने लगे, ''भला हो इन आर्यसमाजियों, अकालियों का जिन्होंने हमें ऐसे गुरु के दर्शन करवा दिए। हमनें तो कभी ऐसा महात्मा देखा ही नहीं था।'' पलटू साहब कहते हैं:

लक बनकर फिरे करे तीन लोक उजागर।
उसे हमारी सोच पलक भर नहीं विसारे॥

निन्दक को दिन-रात हमारी सोच लगी रहती है वह हमारा प्रचार करता रहता है।

जैसे सोना तापि अगिन में निरमल करै सोनारा॥
घन अहरन कसि हीरा निबटै कीमत लच्छ हजारा॥

आप कहते हैं कि किस तरह सुनार सोने को अग्नि का सेक देता है, किस तरह सोना चोटें सहता है। हीरे को तराशा जाता है तभी उसकी कीमत पड़ती है। इसी तरह हमारी भी धड़त होती है कि इसमें कोई मैल न रह जाए!

काल ने जिसे गिराना होता है उसके पीछे चार आदमी प्रशंसा करने में लगा देता है कि यह बहुत अच्छा है। बस! फिर हम कमाई करना छोड़ देते हैं अगर दो आदमी हमें माथा टेकने लग जाएं तो हमारे लिए धरती पर पैर रखना मुश्किल हो जाता है। हम इंसान को इंसान नहीं समझते ऐसे लोग निन्दा कैसे सहन कर लेंगे? अगर कोई इनकी मामूली सी निन्दा भी कर दे तो वे गुरु को ही छोड़ जाते हैं कि मैं इतना शरीफ, मुझे किसी ने ऐसा क्यों कह दिया?

कई प्रेमी आकर मुझसे कहते हैं कि हमें घरवाले ताना मारते हैं कि तू हर महीने सतसंग में जाता है। जब हम महाराज सावन सिंह जी के चरणों में जाते थे तो हमारे गांव के भी कुछ लोग हमें पंद्रह दिन पहले ही याद करवा देते कि आप सतसंग में नहीं गए? मैं जब आर्मी में था तो अमृतसर में आर्मी के कुछ लोग मुझसे कहते, ''भाई जी! आप सतसंग में नहीं गए, आपने कब जाना है?''

हम उन लोगों की बात का बुरा मानते हैं लेकिन वे हमारा भला करते हैं, याद दिलाते हैं कहीं हमारा नित्य-नियम खराब न हो जाए।

ऐसे जाँचत दुष्ट संत कूँ करन जगत उजियारा॥
जोग जज्ञ जप पाप कटन हितु करै सकल संसारा॥

आप प्यार से कहते हैं कि लोग पापों को काटने के लिए जप, तप, योग करते हैं, धन-पदार्थ खर्च करते हैं लेकिन निन्दक कृपा करके सन्तों को उजागर कर देता है। जिसे सन्तों का पता नहीं होता निन्दक उसे भी जाकर बता देता है ताकि वह भी फायदा उठा ले। हमारा यह धर्म नहीं कि हम भी उसकी तरह ही हो जाएं, निन्दक की नकल करें; उसे निन्दा में ही जवाब दें। हमारा धर्म है कि हम उसका आदर करें, उससे प्यार करें। पलटू साहब कहते हैं:

देखके निन्दक को करूँ प्रणाम मैं, धन्य महाराज जिसने भक्त बचाया।

हर आदमी मजदूरी लेकर काम करता है लेकिन निन्दक बिना दाम मैल धो देता है। कबीर साहब कहते हैं:

हृदय शुद्ध जो निन्दया होए तो हमरे कपड़े निन्दक धोए।

ऐसा नहीं कि हमारे अंदर ऐब हो! दुनिया ऐबी को ऐबी कहे तो हम सोचें कि हमारी तो बहुत निन्दा हो रही है। हमारे अंदर ऐब नहीं होने चाहिए। हमारा हृदय साफ हो, अंदर से निर्मल हों, हम पवित्र हों और परमात्मा उसमें बैठा हो।

बिन करनी मम कर्म कठिन सब मेटै निंदक प्यारा॥
सुखी रहो निंदक जग माहीं रोग न हो तन सारा॥

शुक्र मनाएं कि इस बेचारे को कोई रोग न लग जाए अगर यह रोगी हो गया चारपाई पर पड़ गया तो किसके पास जाकर हमारी प्रशंसा करेगा, कैसे हमारी मैल धोएगा?

हमरी निंदा करने वाला उतरै भव निधि पारा॥

महात्मा चरनदास जी प्यार से कहते हैं, ''हम तो दिल से यही प्रार्थना करते हैं कि निन्दक भी परमात्मा के दरबार में पहुंच जाए ताकि इसकी आंखे और कान खुल जाएं कि मैं जिसकी निन्दा करता था वह मालिक से मिला हुआ था। आंखों से देखकर ही हमें विश्वास आता है कि मैं गलत था।''

आप फिर प्यार से कहते हैं कि हे परमात्मा! तू इन्हें भी दरवाजा खोल, इन्हें भी अपने साथ मिला। महात्मा का दिल विशाल होता है, ऊँचे ख्याल होते हैं।

निंदक के चरनों की अस्तुति भाखौं बारम्बारा॥
चरनदास कहैं सुनियो साधो निंदक साधक भारा॥

मैंने पहले भी कई बार आपको महात्मा जयदेव की कहानी सुनाई है। आपने यह कहानी पढ़ी भी होगी। महात्मा जयदेव बहुत कमाई वाले परमगति को प्राप्त थे। आप एक बार कहीं बाहर जा रहे थे, चार लुटेरों ने आपको पकड़ लिया और आपका धन-पदार्थ छीन लिया। लुटेरों ने आपको बहुत चोटें पहुंचाई आपके दोनों बाजू काट दिए। वे लुटेरे अपनी तरफ से तो आपको मारकर गए थे लेकिन मालिक अपने भक्तों की संभाल करता है।

आप चलते-चलते राजदरबार में पहुंच गए। वहां का राजा आपका नामलेवा सेवक था। राजा ने महात्मा जयदेव का इलाज करवाया और आपका बहुत आदर-सत्कार किया। आप वहीं राजदरबार में रहकर भजन-सिमरन करने लगे। जब लुटेरों को पता चला कि जयदेव जी का राजदरबार में बहुत आदर-सत्कार हो रहा है अगर जयदेव ने राजा को हमारे बारे में बता दिया तो राजा हमारे बच्चों को नहीं छोड़ेगा क्योंकि वह राजा का गुरु है।

हम जैसे खुद होते हैं वैसे ही दूसरों को समझते हैं। वे चारों लुटेरे साधुओं वाले भगवे कपड़े पहनकर राजदरबार में आकर कहने

लगे कि हमने जयदेव जी से मिलना है। जयदेव ने उन्हें पहचान लिया और उन्होंने भी जयदेव को पहचान लिया। जयदेव ने राजा से कहकर उनका अच्छा आदर-सत्कार करवाया। उन्हें अच्छे मकान में रहने की जगह दी और उनकी बहुत अच्छी तरह मेहमान-नवाजी की।

जब दो-चार दिन रहकर लुटेरे राजमहल से जाने लगे तो महात्मा जयदेव उन लुटेरों को बहुत प्यार से मिले और कहा, ''महात्मा जी! फिर कभी दर्शनों का मौका देना।'' राजा के अहलकार उन्हें बाहर छोड़ने गए तो अहलकारों ने लुटेरों से कहा, ''जयदेव जी बहुत कमाई वाले महात्मा है फिर भी उन्होंने आपकी बहुत इज्जत की।'' लुटेरो ने कहा कि इसमें भी राज है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

बुरा बुराई न तजे।

बुरे ने तो जहर ही निकालनी है। अहलकारों के पूछने पर लुटेरो ने बताया कि तुम किसी से बात नहीं करोगे। जयदेव ने हमारी बहुत सेवा की है। अहलकारों ने कहा कि आप हमें बताओ हम किसी से कोई बात नहीं करेंगे। तब लुटेरों ने बताया कि जब हम जवान थे उस समय हमने जयदेव के साथ मिलकर एक डाका डाला था। जिसमें जयदेव पकड़ा गया था इसको सजा हुई थी, इसके बाजू काट दिए गए थे। इसलिए जयदेव ने हमारा इतना सत्कार किया कि हम इसकी पोल न खोल दें। यह सुनकर अहलकार हैरान रह गए।

अहलकारों ने वापिस आकर जयदेव को बताया कि मुंह छोटा है बात बड़ी है लेकिन बात करनी पड़ती है। जयदेव परमात्मा रूप थे वे अपनी कोहनियां मलकर कहने लगे कि हे परमात्मा! इन्हें सुमति बख्श। महात्मा जयदेव की जीवनी में आता है कि ऐसा करने से उनके बाजू ठीक हो गए थे। आपने निन्दकों के साथ भी प्यार किया।

महात्मा चरनदास जी कथनी छोड़कर करनी पर जोर देकर कहते हैं कि कथनी थोथी है करनी मुख्य है। महात्मा संसार में

आकर **संघर्ष** करते हैं, उन्हें सच्चाई का ज्ञान हो जाता है। परमात्मा उनके अंदर बैठकर बोलता है वे हमारे ऊपर रहम करते हैं ताकि लोग भ्रम से निकल जाएं। पूरे महात्मा की खोज करें और 'नाम' लेकर कमाई करें। जब सन्त सच बताते हैं तो जिन लोगों की दुकानदारी में फर्क पड़ता है वे लोग सन्तों की निन्दा करते हैं।

सन्त प्यार से कहते हैं, ''देखो प्यारेयो! आप लोग रोजाना वेद-शास्त्रों की कथा करते हैं, क्या उनमें यह सब नहीं लिखा हुआ? लेकिन उनका परमार्थ से कोई मतलब नहीं होता उन्हें अपना स्वार्थ होता है। हमें छोटी-छोटी बातों से घबराकर निन्दा नहीं करनी चाहिए अगर कोई निन्दा करता है तो उसे उसकी मौज पर छोड़ दें।'' हमें दया का अंग नहीं छोड़ना चाहिए। सतगुरु के अंदर दया ही होती है।

मैं गुरु गोविंद सिंह जी का वाक्या सुनाया करता हूं कि चन्दू सवाई ने गुरु अर्जुनदेव जी को बहुत कष्ट पहुंचाए। एक बार गुरु गोविंद सिंह जी चले जा रहे थे। भाई दया सिंह ने सहज स्वभाव आपसे पूछा, ''महाराज जी! चन्दू सवाई तो नर्कों में सड़ रहा होगा?''

गुरु गोविंद सिंह जी ने प्यार से कहा कि भाई दया सिंह! तू अंदर जाकर अपनी आंखों से देख लेना। उसे तो उसी समय गुरु नानक जी ने संभाल लिया था क्योंकि उसने दोनों गुरुओं के दर्शन किए हुए थे। वह दिन-रात गुरु अर्जुनदेव जी का ख्याल नही छोड़ता था कि इन्हें कौन-कौन से कष्ट दूं। उसका ध्यान पक चुका था।

गुरु नानकदेव जी की बानी में आता है परमात्मा को कोई भी याद करे, पुत्र, स्त्री, पति या कोई सज्जन। परमात्मा की नजर में कोई भी दुश्मन नहीं होता। सब एक समान होते हैं।

गुरु नानक जिन सुणया पेखया, से गर्भवास न पड़या रे।

महाराज सावन कहते थे कि सतसंगी के घर में तो उसकी भी संभाल हो जाती है जिसे नाम तक नहीं मिला होता लेकिन शर्त यह है कि जब सतसंगी आपस में बात करते हैं उसे थोड़ा बहुत भरोसा हो।

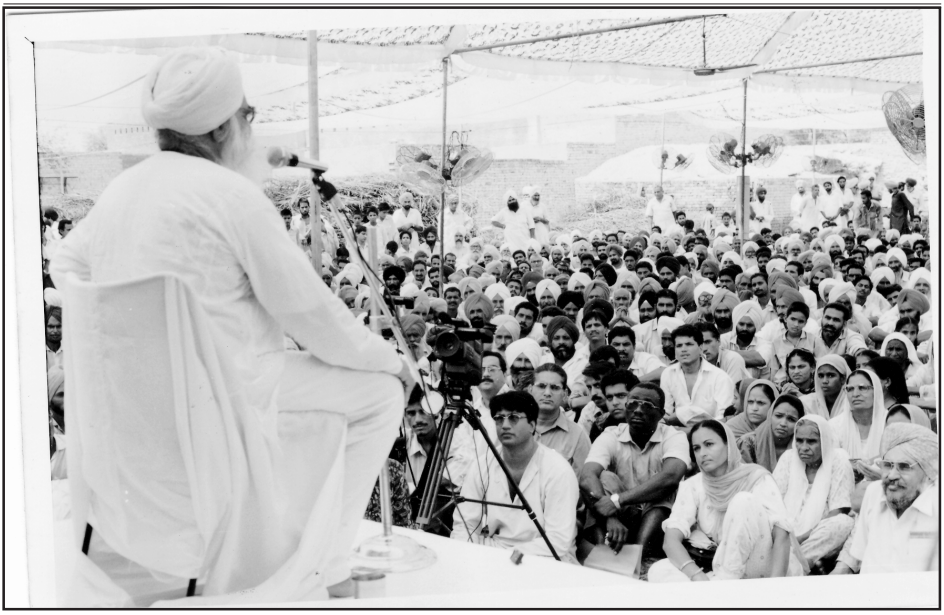

हमें भूलकर भी किसी की निन्दा नहीं करनी चाहिए। अवगुण देखने हैं तो अपने देखें। गुण देखने हैं तो दूसरों के देखें। जब हमारी आदत ऐसी बन जाएगी तो अपने आप ही निन्दा समाप्त हो जाएगी। हम इस बिमारी से बच जाएंगे। साकत के साथ प्यार भी किसी काम का नहीं। कबीर साहब कहते हैं:

साधु स्यो झगड़ा भला, साकत स्यों नहीं मेल।

परमात्मा सबको देने वाला है। निन्दा उस समय उत्पन्न होती है जब हम दूसरे के घर में ज्यादा और अपने घर में कम वस्तु देखते हैं तो कहते हैं ऐसा क्यों है? यह सब कर्मों के मुताबिक है।

सरब जिया का एको दाता, सो मेह विसर न जाई।

सबका एक ही दाता है। जैसी हमारी पहुंच है उसके मुताबिक ही हम वस्तु प्राप्त करते हैं। हमें भी चाहिए जो महात्मा चरनदास ने कहा उसके मुताबिक अपना जीवन बनाए और जिस मकसद के लिए परमात्मा ने इंसान का जामा दिया है नाम जपकर इसे सफल बनाएं।

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

माफी

26 मार्च 1989

16 पी. एस. आश्रम राजस्थान

एक प्रेमी : *जिस व्यक्ति ने मेरे दिल को बहुत दुःखाया हो, मैं चाहता हूं कि मैं उसे माफ कर दूं। उसके द्वारा की हुई बुरी हरकतों को भूल जाऊं। मैं दिल से चाहता हूं कि उसे* ***माफ*** *कर दूं। ऐसा किस तरह से हो सकता है, इसमें आप मेरी क्या मदद कर सकते हैं?*

बाबा जी : हर सतसंगी के लिए इस सवाल को समझना जरूरी है। **माफ** करना सन्तमत का बड़ा अंग है। जब हम किसी को माफ कर देते हैं तो हमारे सपने में भी नहीं आना चाहिए कि हमने उसे **माफ** किया अगर हम बार-बार इस बात को दिल में लाएंगे तो हो सकता है कि हमारा मन हमें धोखा दे जाए। हम अहंकार में भी आ सकते हैं और यह भी हो सकता है कि हम रोजाना उस व्यक्ति से यह कहने लग जाएं, ''मैंने तुझे **माफ** किया है।''

अगर हमने सच्चे दिल से किसी को **माफ** किया है तो उसे भूल जाना बहुत जरूरी है। सतसंगी को हमेशा गुरु का स्वरूप अपनी आंखो के आगे रखना चाहिए। हम यह न सोचे कि हमने इसे **माफ** किया है हम जीव इतने ताकतवर नहीं कि किसी को माफ कर सकें। आप सोंचे! हमारे अंदर गुरु की दया है जिसने इसे माफ किया है। अच्छा यही होगा कि आप बैठकर भजन-सिमरन करें, गुरु का धन्यवाद करें कि गुरु हमें भी क्षमा करे।

एक बार मैंने स्वामी जी महाराज की बानी पर सतसंग दिया था। शायद कई प्रेमियों को वह सतसंग पढ़ने का मौका मिला हो। उस सतसंग में यह था अगर किसी से गलती हो जाती है तो उसका फर्ज बनता है कि वह बिना झिझक **माफी** मांग लें, जिसका दिल

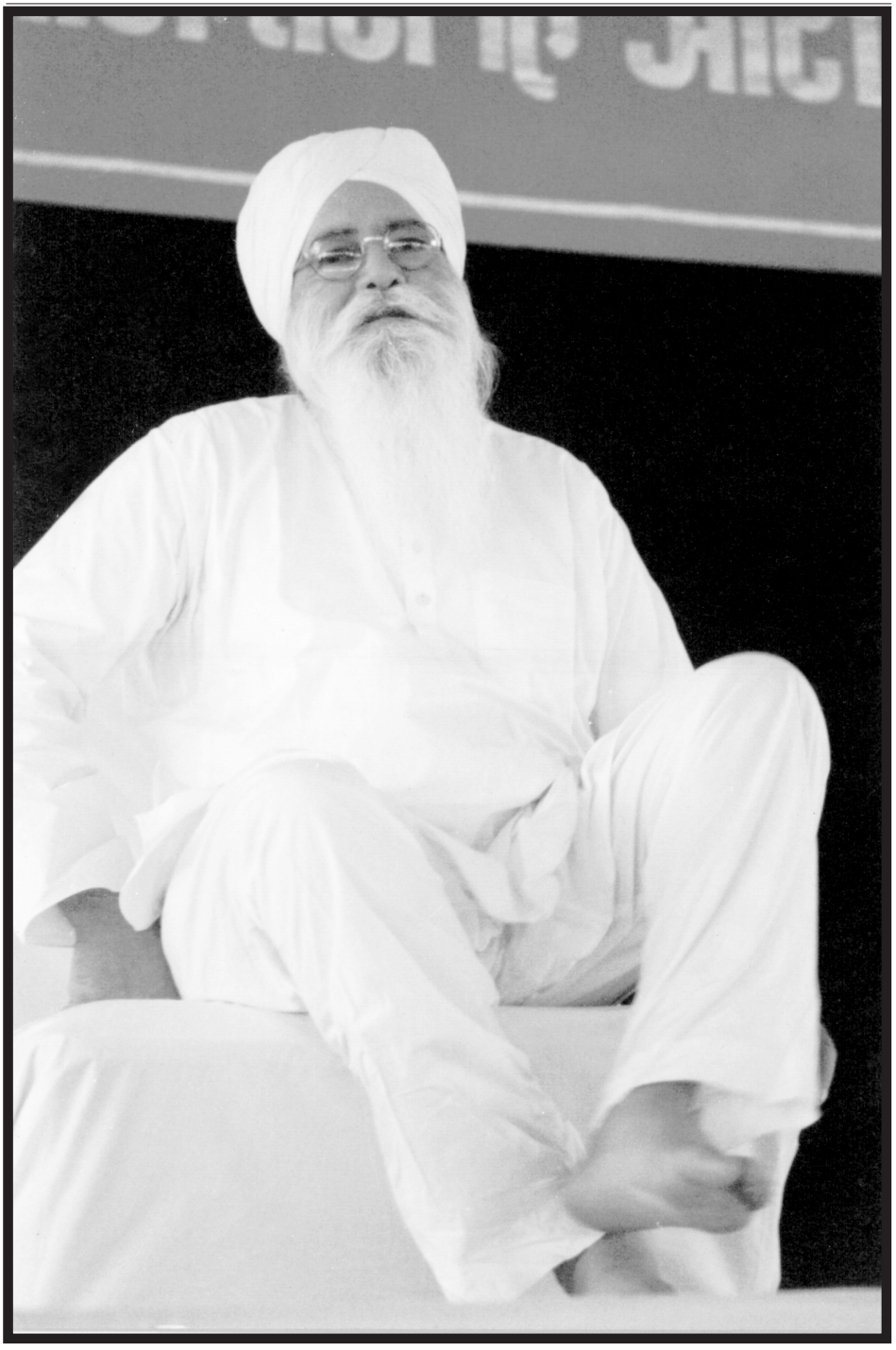

दुखाया है उसकी भी जिम्मेवारी बनती है कि वह प्रेम-प्यार से गुरु के नाम में उसे **माफ** कर दे। आत्मा निर्दोष है, कोई गलती नहीं करती। आत्मा प्रभु की अंश है, प्रभु अभूल है गलतियों से रहित है। हम जब प्रभु से दूर हो जाते हैं उसकी भक्ति नहीं करते तो प्रभु में गलतियां निकालते हैं कि हमारे साथ ऐसा क्यों हुआ? जबकि हम जानते हैं कि इस तरह हमारे कर्मों का भुगतान हो रहा है।

प्यारेयो! हमारा मन गलतियां करता है, मन किसी को माफ नहीं करता। मन के पास माफी है ही नहीं। प्रभु ने **माफी** सन्तों के पास रखी है। सन्त आत्मा के अंदर 'शब्द-नाम' का गुण रखते हैं। गलती करने वाले से उसका मन ही गलती करवाता है, **माफी** देने वाले का मन उसे माफ नहीं कर रहा होता; अंदर शब्द-रुप गुरु ही माफ कर रहा होता है। इसलिए सन्त अभ्यास पर जोर देते हैं कि अभ्यास करके अपने आपको पहचानें कि आप कौन हैं, कहां से आए हैं? फिर आपको पता लगता है कि आप माफ नहीं कर रहे, आपके अंदर बैठकर आपका शब्द-रुप गुरु ही माफ कर रहा है और वही **माफी** मांग रहा है तो हम किस पर अहसान कर रहे हैं?

मुझे बाईबल के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं है। आप लोग बाईबल की अच्छी जानकारी रखते हैं। वही सच्चा ईसाई है जो दूसरे को माफ करता है और प्रार्थना करता है कि प्रभु तू इसे बख्श दे।

आप जानते हैं कि क्राईस्ट को कांटों का ताज पहनाया गया, सूली पर चढ़ा दिया गया। इससे ज्यादा और क्या कष्ट दिया जा सकता था कि यह सुनकर भी आत्मा कांपती है लेकिन उस समय क्राईस्ट ने यही कहा, ''हे प्रभु! ये लोग अनजाने में ऐसा कर रहे हैं। तू इन्हें माफ कर दे, ये नहीं जानते कि अपने लिए कितना बुरा कर्म कर रहे हैं।'' हम उन्हीं महापुरुषों के सेवक हैं।

मैं आपको गुरु अर्जुनदेव जी का इतिहास बताऊंगा कि किस तरह उस समय के सरकारी अफसर चंदूसवाई ने आपको कई तरह

के शारीरिक कष्ट दिए। आपको गर्म तवे पर बिठाया गया। आपके सिर में गर्म रेत डाला गया। उस समय की हुकूमत ने आपका घर-घाट लूट लिया। आपके सेवकों को भी बहुत कष्ट दिए गए अगर हमारे साथ ऐसा हो तो हमें कितना कष्ट महसूस होगा?

गुरु अर्जुनदेव जी के शरीर छोड़ने के बाद उसी अफसर चंदूसवाई ने आपके लड़के गुरु हरगोविंद को जहर देकर मारने का बीड़ा उठाया। हुकूमत बदलती रहती है कभी किसी के हाथ आ जाती है तो कभी किसी के हाथ। आखिर लोग मजे उड़ाने के लिए एक-दूसरे की बुराई करते हैं जोकि कई बार उन्हें भुगतनी भी पड़ती है।

जब हुकूमत बदली तो उन्होंने देखा कि गुरु हरगोविंद का प्रताप बढ़ रहा है। उन लोगों ने गुरु हरगोविंद को खुश करने के लिए कहा कि आप जहां चाहे रह सकते हैं, अपना प्रचार कर सकते हैं और चंदूसवाई को जो सजा देना चाहे दे सकते हैं।

सन्त रहम दिल होते हैं। सन्त कहते हैं कि हमारे दरबार में **माफी** के लिए जगह है, सजा के लिए कोई जगह नहीं लेकिन हम इसे दुनिया के सामने जरूर पेश करेंगे कि इसने एक फकीर को कितने कष्ट दिए। **माफी** गुरु ही दे सकते हैं, सेवक के पास ताकत नहीं होती क्योंकि आमतौर पर सेवक जज्बाती होता है।

जब चंदूसवाई सेवकों के हाथ में आया तो सेवकों ने बदले की भावना में चंदूसवाई के गले में लोहे की जंजीर डालकर उसे लाहौर के बाजार में कुत्ते की तरह घुमाया। चंदूसवाई ने जिस भड़भूजे से गुरु अर्जुनदेव जी के सिर में गर्म रेत डलवाया था। जब उसकी दुकान पर पहुंचे तो उस भड़भूजे को चंदूसवाई के ऊपर गुस्सा आया कि इसने हुकूमत के नशे में आकर मुझसे एक फकीर के सिर पर रेत डलवाया था। उस भड़भूजे ने वही कड़छा चंदूसवाई के सिर पर मारा। जब चंदूसवाई की जान निकलने लगी तो वह तड़प कर बोला:

हरगोबिंद मोहे अवगत मारा।

आप जानते हैं कि गुरु को पुन्नी याद करे! पापी याद करे! वे जीव की मदद करते हैं। गुरु हरगोविंद ने चंदूसवाई की संभाल की।

एक बार गुरु गोविंदसिंह जी के खास प्यारे भाई दयासिंह ने एकांत में गुरु गोविंद सिंह जी से सवाल किया, ''चंदूसवाई ने बहुत पाप किए, गुरु साहब को बहुत कष्ट दिए; वह तो नर्कों में सड़ रहा होगा?'' गुरु गोविंद सिंह जी ने हंसकर कहा, ''उसका उद्धार तो गुरु हरगोविंद जी ने तभी कर दिया था, उसके लिए नर्कों में जगह नहीं थी। चंदूसवाई ने दो गुरुओं के दर्शन किए हुए थे। सोते-जागते यहां तक की स्वपन में भी हमेशा ही उसका ध्यान बना हुआ था। आखिरी वक्त में उसने गुरुओं के आगे फरियाद की।''

आप अंदाजा लगा सकते हैं कि परमात्मा ने सन्तों के अंदर कितनी **माफी** रखी होती है। सन्तों का शृंगार **माफी** होता है। हम भी सन्तों के सेवक हैं हमारा भी फर्ज बनता है कि हम अपने गुरु को ध्यान में रखते हुए दूसरे को माफ करें। इस बात को बार-बार अपने ख्याल में न लाएं कि मैंने उसे माफ किया है। भूलकर भी उससे न कहें कि मैंने तुझे माफ किया है।

मैं बताया करता हूं कि हमें गृहस्थ जीवन में भी **माफी** का अंग नहीं छोड़ना चाहिए। हमारे घरों में बेइत्तफाकी इसलिए होती है क्योंकि पति-पत्नी **माफी** के अंग को नहीं अपनाते अगर हम एक-दूसरे को माफ करना सीख लें! हमारा गृहस्थ भी स्वर्ग बन सकता है। जो अंदर जाते हैं उन्हें इस राज का ज्ञान है कि क्या हम पुन्नी होकर गुरु के पास आएं हैं? ऐसी बात नहीं गुरु ने हमें माफ किया हुआ है।

पिछले अवगुण बख्श ले, प्रभ अग्गे मार्ग पावे।

गुरु ने पिछले बुरे कर्मों की **माफी** दी होती है। गुरु आगे के लिए कहता है कि प्यारेयो! अब बुरा कर्म न करें। साध-संगत और 'शब्द' के साथ जुड़े रहें। आप अक्सर देखते हैं कि गुरु अपने सेवक को यह अहसास नहीं करवाते कि मैंने तेरे ऊपर कोई उपकार किया है।

कई बार सेवक गुरु के सामने खड़ा होकर कहता है कि आपने मुझपर यह उपकार किया, मेरे लिए इतना कुछ किया लेकिन गुरु फिर भी यही कहता है, ''मुझमें यह ताकत नहीं है जो किया है मेरे गुरुदेव ने ही किया है।''

मथुरापट बहुत कमाई वाला संस्कृत का पंडित था। मथुरापट ने हिन्दुस्तान में बहुत खोज भी की थी। आखिर में वह गुरु रामदास जी की शरण में आया। गुरु ग्रन्थ साहब में मथुरापट की बाणी आती है। आप कहते हैं :

हम अवगुण भरे एक गुण नाहीं, अमृत छोड़ बिखे बिख खाई।
माया मोह भ्रम भए भूले, सुत दारा स्यों प्रीत लगाई।
इक उत्तम पंथ सुणयों गुरु संगत, तह मिलत जम त्रास मिटाई।
इक अरदास भाट कीर्त दी, गुरु रामदास राख्यो शरणाई॥

माता-पिता बच्चों को पालते हैं वे जानते हैं कि बच्चा हर समय गलती पर गलती करता है। माता के अंदर ममता और **माफी** होती है। माता बच्चे के अपराध को फौरन भूल जाती है। इसी तरह सन्त भी अपने 'शब्द-रूप' गुरु के सामने चालीस दिन के बच्चे की तरह ही रहते हैं। आप कहते हैं:

सुत अपराध करत है जेते, जननी चीत न राखस तेते।
रमैय्या हौं बारक तेरा, काहे न खंडस अवगुण मेरा॥

मैं आशा करता हूं कि आप इसे प्यार से समझ गए होंगे? इस बारे में और भी बहुत कुछ समझाया जा सकता है।

❀ ❀ ❀

सन्तों का एक-एक वचन करोड़ों रूपयों का होता है। हम सतसंग में जो सुनें घर आकर उस पर विचार करें लेकिन हमारी ऐसी हालत है कि एक कान से सुना और दूसरे कान से निकाल दिया। सतसंग में गए और पल्ला झाड़कर चले आए; जैसे गए वैसे ही खाली वापिस आ गए।

- महाराज सावन सिंह जी-